हमें जीना है

गाना चाहता हूँ गीत
बोल कहाँ से लाऊं,
रखना चाहता हूँ प्रीत
प्रेम कहाँ से लाऊं,
कोयल भी आज बाग में
छुपकर रोती रहती है,
आओ हम मिलकर सीखें
सेवा कैसे होती है,
मुरझाते हुवे पुष्पों में हमें
वापस खुशबू लानी है,
जीवन तो एक पहेली है
इसको हमें बुझानी है,
आने वाली नस्लों के लिए
शांति की राह बनानी है,
बदलते हुवे हर मौसम में
जीने की कला सीखनी है,
ये तय है हर आने वाले को
छोड़ के वापस जाना है,
जब तक साथ है साँसों का

कुछ काम करते रहना है,
जब तक हैं इस रँगमंच पर
हर किरदार निभाना है,
जीवन के हर मोड़ पर
सहयोग करते ही रहना है,
इंसानियत के सब रिश्तों को
प्रेम से हमे निभाना है,
निभाकर मानव धर्म सभी को
सेवा करते रहना है,

न्यायाधिपति गोपाल कृष्ण व्यास
अध्यक्ष-मानवाधिकार आयोग
राजस्थान, जयपुर